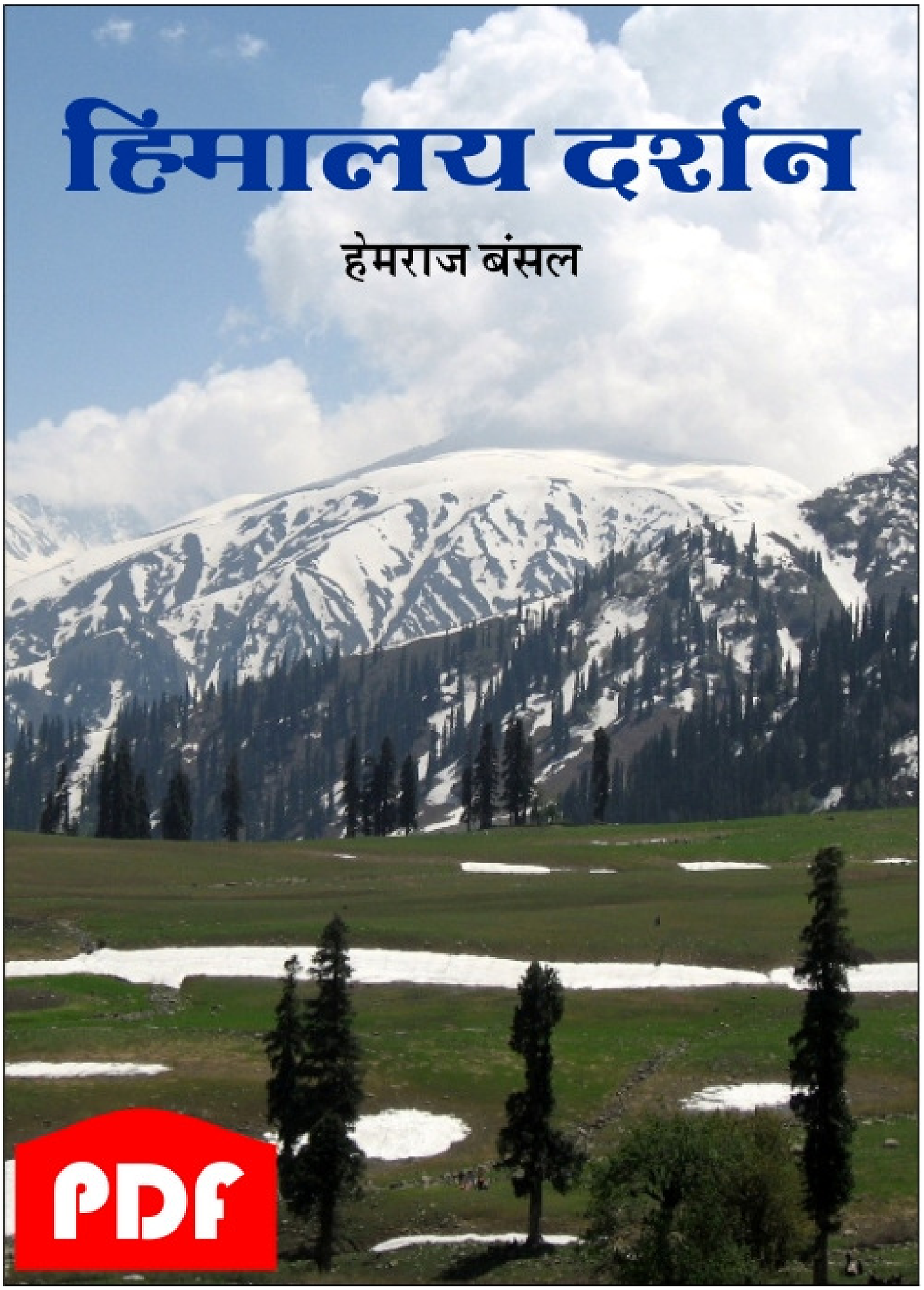
हिमालय दर्शन
हेमराज बंसल
PDF

हिमालय दर्शन

मई का महिना आते ही मित्रों के बीच घूमने जाने की चर्चा शुरु हो गई। प्रारम्भिक विचार सपरिवार जाने का था पर सुयोग नहीं बन पाया। आजादी बचाओ आंदोलन के प्रणेता श्री राजीव दीक्षित की बारां मंडी प्रांगण में आयोजित सभा में पारीक सा. व महेन्द्र जी जूते वाले मेरे पास ही बैठे थे। हमारा अक्टूबर के पहले सप्ताह में घूमने जाने का कार्यक्रम तय हो गया। और साथी ढूंढने का प्रयास किया पर दीपावली के चक्कर में कोई तैयार नहीं हुआ। मुझे भी घर में यात्रा का विरोध झेलना पड़ा पर हमारा निश्चय अटल रहा। 26 सितम्बर को बारां रैल्वेस्टेशन से तीन आरक्षित टिकट मुजफ्फरनगर तक के 2 अक्टूबर, 2000 की यात्रा के मंगवाये। मुजफ्फरनगर में पारीक सा. की बेटी से मिलकर जाने में भला हमें क्या आपत्ति होती? पारीक सा. ने अभी तीस सितम्बर को ही अपनी नौकरी से रिटायरमेंट लिया है। इधर मैं भी एक अक्टूबर को हमारे चचेरे भाई बबलू का विवाह तय करने शिवपुरी चला गया था अन्यथा हम कुछ दिन पूर्व भी यात्रा पर रवाना हो सकते थे।

2 अक्टूबर गांधीजी एवं शास्त्री जी का जन्मदिन है। हम इसी दिन सायं पांच बजे की बस से बारां से कोटा के लिये निकले। महेन्द्र जी को कोटा में कुछ काम था अतः वे हमारे से पहले कोटा जा चुके थे। हम सात बजे कोटा पहुंचे। पारीक सा. ने रतन नमकीन सेंटर से काफी सारे नमकीन बेटी के लिये खरीदे। प्लेटफार्म पहुंचने तक देहरादून एक्सप्रेस गाड़ी आ चुकी थी। हमने एस–10 कोच में हमारी सीटों पर सामान जमाया। थोड़ी ही देर में महेन्द्र जी भी उनके मामाजी के साथ हमसे आ मिले। मामाजी भी इसी गाड़ी में दिल्ली जा रहे हैं। हमारे डिब्बे में बारां के चार युवा व्यापारी भी बैठे जो अपने व्यापार के सिलसिले में दिल्ली जा रहे हैं। सवाई माधोपुर तक हम खाना खाते व ताश खेलते रहे इसके बाद हम बिस्तर लगा कर सो गये। दिल्ली की सीमा पर बल्लभगढ़ स्टेशन पर मेरी नींद खुली। इसके बाद क्रमशः जाग होती गई। दिल्ली स्टेशन पर बारां के कई साथी उतर गये। मेरठ के पूर्व अनारक्षित दैनिक यात्रियों की भारी भीड़ हो गई। आगे हमारा सफर आराम से कटा।

3 अक्टूबर 2000 ग्यारह बजे दोपहर मुजफ्फरनगर पहुंचे। दो साइकिल रिक्शा कर कुंवर सा. प्रवीणजी के घर पहुंच गये। चाय–नाश्ते के बाद स्नान हुआ। कुंवर सा. के परिवार ने हमारी आवभगत में कोई कसर नहीं छोड़ी। दो बजे हमने खाना खाया। इसके तुरंत बाद हम आगे की यात्रा पर रवाना हुये। बेटी पूनम, कुंवर सा. प्रवीणजी अपने दोनों बच्चों के साथ हमें बस में बिठाने आये। थोड़े इंतजार के बाद हमें सुपरफास्ट डीलक्स बस मिली जिसने हमें सायं छः बजे हरिद्वार पहुंचा दिया। पारीक सा. के आदेश पर महेन्द्रजी व मैं होटल ढूंढने गये। होटल तो देखे नहीं, गरीबदास जी महाराज की धर्मशाला में ही कमरा तय कर लिया। मैं पारीक सा. को बस स्टैण्ड से बुला कर लाया इतनी देर में महेन्द्रजी ने धर्मशाला की औपचारिकतायें पूरी की। यहां आकर हमने समय नष्ट नहीं किया। तुरंत ही बैग में कपड़े जमा साइकिल रिक्शे से हर की पैड़ी के लिये रवाना हो गये।

गंगा मां की विशाल शीतल जलधारा, उस पर बने अनेकों पुल व प्लेटफार्म, ऊपर से चमचमाती फ्लड लाइटें और यात्रियों का हजूम। हरकी पैड़ी के वातावरण को देखते ही सारी थकान दूर हो गई। यहां की प्रसिद्ध गंगा आरती हमारे आने से पूर्व ही हो चुकी थी। हम काफी देर गंगातट पर टहलते रहे, फिर पूर्वी किनारे पर जाकर स्नान किया। वापसी में गंगा मंदिर में दर्शन किये। बाजार में आ एक ठीक से होटल पर खाना तथा एक–एक गिलास दूध ग्रहण किया व रिक्शे में बैठ साढ़े नौ बजे धर्मशाला पहुंचे।

4–10–2000 बुधवार

धर्मशाला में अच्छे पलंग, पंखे व कूलर की हवा में सोते हुये भी मुझे गहरी नींद नहीं आई। एक तो जुकाम और दूसरा अजीर्ण के कारण हो रहा पेट दर्द। यहां हरिद्धार में तीन बजे से ही श्रद्धालुओं का गंगा स्नान हेतु जाना शुरु हो जाता है। पारीक सा. व महेन्द्र जी पांच बजे चाय पीने गये। हमारे प्रथम मंजिल पर स्थित कमरे का एक दरवाजा

मुख्य सड़क की ओर खुलता है पर वाहनों से हो रहे भारी प्रदूषण के कारण हम उसे खुला नहीं रख सके। कार्यक्रम के अनुसार हमें आज स्नान ऋषिकेश में करना है।

हम प्रातः पैदल बस स्टैण्ड चले गये। बहुत देर बाद खाली बस आई। आपस में बहस के बाद हमने श्रीनगर (गढ़वाल) का टिकट लिया। समय बचाने के लिये ऋषिकेश यात्रा रद्ध कर दी गई। बस राजाजी नेशनल पार्क, चीसा जल विद्युत केन्द्र तथा गंगा में बंधे बांध के पास से होती हुई ऋषिकेश पहुंची। रास्ते की हरियाली अच्छी लगी। आधा घंटा ऋषिकेश में रुकने के बाद बस द्रुतगति से चली। दवाइयां लेने से मेरी तबियत भी ठीक रही। देवप्रयाग में हमने नाश्ता किया। साढ़े बारह बजे हम श्रीनगर पहुंचे। रुकने के लिये स्थान ढूंढने में एक घंटा लग गया। श्री बद्रीनाथ–केदारनाथ समिती द्वारा संचालित डालमिया धर्मशाला में चार पलंगों वाला कमरा 150 रु. में लिया। सामान जमाने के बाद दोनों साथी चाय पीने गये। इस अवधि में मैंने अपने कपड़े धो डाले। काफी दिनों बाद अपने हाथ से कपड़े धोने का अवसर मिला। मुझे यह काम बहुत भारी लगा तथा मैं पसीने में नहा गया। पारीक सा. ने बाजार से आकर बताया कि हम अलकनंदा नदी में नहाने चल रहे हैं, पास ही घाट बना हुआ है।

कुछ देर में ही हम नहाने के सामान ले घाट पर जा पहुंचे। वस्त्र प्रक्षालन, मंजन, फोटोग्राफी व स्नान हुआ। गंगा में स्वच्छ, शीतल जल तीव्रगति से प्रवाहमान है। इस प्रवाह में स्थानीय बच्चे कूद–कूद कर नहा रहे हैं। वे काफी दूर तक तैरने भी जा रहे हैं। उनसे प्रेरणा पा, मैं भी कुछ तैरा। पारीक सा. बहुत अच्छे तैराक हैं पर यहां वे बिल्कुल नहीं तैरे। यहां धूप बहुत तेज है तथा आशा के विपरीत मौसम एकदम गरम। घाट पर एक वृक्ष की छाया के नीचे हमने कपड़े बदले फिर भी हम पसीने से नहा गये। श्रीनगर के चारों ओर हरी–भरी पहाड़ी है। रमणीक दृश्य निहारते हम वापस धर्मशाला पहुंचे तथा वहां के बरामदों की रेलिंग पर सारे गीले कपड़े सुखा दिये।

इस नगर में और क्या देखने लायक है? कई लोगों से पूछा पर यहां ऐसी कोई उल्लेखनीय जगह नहीं है। एक शीश महल म्यूजियम है पर वह यहां से बहुत दूर व ऊंचाई पर है और वह चार बजे बंद भी हो जाता है। हमें भूख लगी है अतः हमने एक होटल में घुस खाना खाया। वापस धर्मशाला आ एक घंटा नींद निकाली। शाम सात बजे घूमने निकले। कोई पांच किलोमीटर सड़क पर टहलते समय गुजारते रहे। वापस धर्मशाला पहुंचने से पूर्व खाना खाया, मौसमी रस पीया तथा बारां फोन से बात की। साढ़े नौ बजे धर्मशाला लौट सो गये। हमारा यहां रुकने का निर्णय ठीक नहीं रहा।

तारीख 5–10–2000 गुरुवार

प्रातः पांच बजे पारीक सा. ने जगाया। नहा धो सात बजे हमने आगे की यात्रा पर जाने हेतु धर्मशाला छोड़ी। बद्रीनाथ जी सीधी जाने वाली बस हमने आगे सीट न मिलने के कारण छोड़ दी। यह निर्णय भी बहुत गलत साबित हुआ। इसके बाद सीधी बद्रीनाथ जी की बस नहीं आई और काफी समय बर्बाद करने के बाद कर्णप्रयाग की बस में बैठना पड़ा। कर्णप्रयाग साढ़े दस बजे उतर हम बस स्टैण्ड के ही एक ढाबे में खाना खाने के लिये घुस गये। खाना खाने के बाद भी हम अगली बस के इंतजार में ढाबे में काफी देर बैठे रहे। ढाबे की खिड़की से पिदारगंगा व अलकनंदा नदी के संगम का मोहक दृश्य दिखाई देता रहा। कुछ देर बाद मुझे पता लगा कि यह ढाबा मांसाहारी भी है। मुझे बहुत वितृष्णा व ग्लानि हुई। पहले पता लग जाता तो मैं यहां खाना छोड़ पानी भी नहीं पीता। मेरे साथी पारीक साहब व महेन्द्रजी को तो यह स्वीकार्य है पर मेरा मन नहीं मानता। आगे भी यात्रा में मेरी इस सोच से मेरे साथियों को मनपसंद खाना नहीं मिल सका। साढ़े ग्यारह बजे हमने बद्रीनाथ जी जाने हेतु एक मिनी बस में आगे की तीन सीटें रोकी।

कर्णप्रयाग के बाद पहाड़ी चढ़ाई वाला कठिन मार्ग शुरु हो जाता है। रास्ते में मुझे नीद आने लगी तो मैंने बस में पीछे की सीट पर बैठ झपकी ली। चमोली के बाद बस बहुत ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ती उतरती आगे बढ़ी। ड्रायवर गाड़ी बहुत तेज चला रहा था ऐसे में नीचे गहरी घांटियों में झांकने पर भय लग रहा था। पीपलकोठी होते हुये हम तीन बजे जोशीमठ पहुंच गये। जोशीमठ से बद्रीनाथजी तक संकरी सड़क है जिस पर बारी–बारी से एक तरफा यातायात निकाला जाता है। जोशीमठ से साढ़े चार बजे गेट खुलना है पर थोड़ी देर बाद ही हमारी बस के ड्राइवर ने बस बद्रीनाथ जी ले जाने से मना कर दिया और यात्रियों को बाकी किराया लौटा दिया। अब हम पुनः असमंजस में पड़ गये। पहले बद्रीनाथजी जायें या पहले जोशीमठ की ही सैर कर लें। हमने बद्रीनाथ जी की बस

तलाश की। उनमें भारी भीड़ थी। गेट के पास ही नृसिंह मंदिर का रास्ता है वहीं हमें बद्रीनाथ–केदारनाथ विकास समिती का विश्राम स्थल दिखाई दे गया। यहां हमें सौ रुपये मात्र में अटैच लेटबाथ डबलबैड कमरा मिल गया। 'ईश्वर की शायद यही इच्छा है' मानकर हम जोशीमठ की धर्मशाला में ही रुक गये। हमें 303 नं. कमरा दिया गया। कमरा बहुत बड़ा व अच्छा है। इसकी उत्तरी खिड़की से पहाड़ का बहुत सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। इस यात्रा में ईश्वर हमारी विशेष मदद कर रहा है। हम सदैव होटल में रुकते थे। अब पता लगा कि धर्मशालाओं में भी वैसी ही सुविधा कम कीमत पर मिल सकती है।

कमरे में पौन घंटे आराम करने के बाद हम घूमने निकले। सर्वप्रथम हमने नृसिंह मंदिर एवं शंकराचार्यजी की गद्दी के दर्शन किये। इसके बाद नवदुर्गा मंदिर गये। आज दुर्गाष्टमी है। घर पर तो उन्हाले की रोटी के साथ कड़ी पकौड़ी बनती है। यात्रा में इन परम्पराओं का उल्लंघन होने पर मैंने मां दुर्गा से क्षमा मांगी। इसके बाद हम पूछते हुये शंकराचार्यजी की तीन और गद्दियों पर गये। हमने सर्वप्रथम जिस गद्दी के दर्शन किये वह भवन लकड़ी से निर्मित कोई दो सौ वर्ष पुराना निर्माणकला का एक नायाब नमूना है। बाद में देखी तीनों गद्दियां वर्तमान में कार्यरत शंकराचार्यों की है। इसमें एक के प्रमुख श्री माधवानंदजी तथा दूसरी के श्री वासुदेवानंदजी सरस्वती है। बीच में एक गुफा है जिसके लिये कहा जाता है कि यहां आदि शंकराचार्यजी ने अपने शिष्य तोड़काचार्य जी के साथ तपस्या की थी। इसी के पास एक प्राचीन कल्पवृक्ष भी है। मान्यता है कि यहां मांगने पर हर इच्छा पूरी होती है। हमने भी यहां सकाम भाव से प्रार्थना की। यहां तीनों आश्रम बहुत विशाल क्षैत्र में बने हुये हैं। शंकराचार्य की पदवी के हक के लिये परस्पर मुकदमेंबाजी चल रही है।

घूमने की थकान उतारने के लिये हम धर्मशाला कोई एक घंटा सोये। आठ बजे भोजन करने हेतु पास ही के सावन होटल नामक ढाबे में जा घुसे। बहुत अच्छा खाना एवं अच्छा व्यवहार मिला। हमने यहां अन्य देखने लायक स्थानों के बारे में जानकारी ली। हमने 'औली' एवं 'तपोवन' और देखना तय किया। साढ़े नौ बजे धर्मशाला जाकर सो गये। हम तीनों बुरी तरह थके हुये थे, हमें लेटते ही नींद आ गई।

6–10–2000 शुक्रवार

रात नींद गहरी आई। प्रातः पांच बजे पारीक सा. ने जगाया। हम नहा–धो, औली जाने के लिये तैयार हो, सात बजे धर्मशाला से बाहर निकले। हमने गरम कपड़े, नाश्ता तथा कैमरा साथ लिया। सावन होटल में दही–परांठा, बिस्किट व दूध का नाश्ता किया। काफी दूर व चढ़ाई पर चल कर हम पूछते–पूछते रोप–वे स्टेशन पर पहुंचे। छः सौ रुपये में तीन टिकट खरीद हम रोप–वे की आठ बजे वाली ट्रिप में बैठ गये। इस रोपवे पर दो ट्रॉलियां – एक आने के लिये एवं एक जाने के लिये चलाई जा रही है। प्रत्येक ट्राली में एक बार में 25 सवारियां बिठाई जाती हैं। इसी हिसाब से टिकट काटे जाते हैं। यह दुनिया का सबसे ऊंचा तथा लंबा रोपवे है। रास्ते में हिमालय के नयनाभिराम दृश्य देखने को मिलते हैं। ट्रोली में मौजूद चालक दल के दो सदस्यों ने गाइड का काम भी किया। जोशीमठ शहर के विभिन्न स्थान बताये। ज्यादा ऊपर जाने पर उसने हमें पूर्वी दिशा में नंदादेवी पर्वत श्रृंखला बताई। धीरे–धीरे बढ़ते हुये हम 10300 फुट की ऊंचाई पर स्थित रोपवे स्टेशन पहुंचे। स्टेशन से एक किमी परिधी में खुले घास के मैदान हैं। इन मैदानों पर दिसम्बर से अप्रैल तक बर्फ की चादर बिछी रहती है। इस बर्फ पर शीतकालीन खेल स्केटिंग आदि खेलने पूरे विश्व के पर्यटक आते हैं। यहां एक होटल तथा जलपानगृह भी बना हुआ है। यहां खिलाड़ियों को नीचे से ऊपर लाने के लिये चार आदमी बैठने लायक लिफ्ट चेयर भी लगी हुई है। यह सारी व्यवस्थायें एक निजी कम्पनी व्यवसायिक आधार पर करती है।

सर्दी की आशा में हम यहां पूरे गर्म कपड़े लेकर आये थे पर यहां तेज धूप खिल रही है और हमें गर्मी महसूस हो रही है। इसी तरह हम यहां शाम तक रुकने के मूड में नाश्ता लेकर आये थे पर हमें ट्रॉली में से उतरने से पूर्व ही एक घंटे बाद का वापसी का समय बता दिया गया। हमने यहां फोटोग्राफी की, थोड़ी देर घूमे फिरे और अपना नाश्ता किया। होटल में हमने मात्र मुफ्त का पानी ही पीया। एक घंटा यहां रुकने में हमारा जी भी भर गया। नौ चालीस पर हमारी ट्रॉली वापस रवाना हुई एवं दस बजे हम जोशीमठ उतर गये। हमारे पास काफी समय बचा है। अब हमने तपोवन जाने के लिये पूछताछ की। तपोवन यहां से 15 किमी दूर है तथा अवैध जीपें लगातार चलती है। निजी जीपें हमारे

गांव की तरह यहां भी ठसाठस भरी जाती है। हम तीनों साथी एक टैक्सी में ड्राइवर के बगल में बैठ तपोवन पहुंचे। किस्मत से हमें जीप में ही एक सरदार जी मिल गए जो तपोवन के गर्म पानी के कुंडों पर बने आश्रम में गत आठ दिनों से रह रहे थे। उनसे हमें स्थान के बारे में पूरी जानकारी मिली तथा मार्ग भी नहीं ढूंढना पड़ा। इस आश्रम में महात्माओं का सदा निवास रहता है। एक बंगाली भक्त जो हमारे साथ जीप में ही आया था यहां के प्रमुख महात्माजी से सूर्योपासना एवं यज्ञ गत एक माह से करवा रहे हैं। यहां पहले दो गर्म पानी के अच्छे कुंड बने हुये थे जो गतवर्ष के भूस्खलन से नष्ट हो गये है। टूटे कुंडों के अवशेष तथा गर्म जल की धारायें विद्यमान है। इस स्थान पर मां पार्वती ने शिवजी को पाने हेतु कठोर तप किया था। इस स्थान पर गर्म पानी में स्नान का विशेष महत्व है। हमारे पास नहाने का साधन नहीं था अतः हमने यहां पानी पीया, हाथमुंह धोये तथा मंदिर में भगवान के दर्शन किये। सरदार जी यहां प्रतिवर्ष जड़ी बूटियां इकठ्ठी करने आते हैं जिनसे वे अपने गांव में जाकर रोगियों का उपचार करते हैं। उन्होंने हमें आसपास के कई स्थानों की भी जानकारी दी। यहां से आठ किमी आगे भविष्य बद्री है जो पंचबद्री में से एक है। चार किमी सड़क मार्ग तथा चार किमी पैदल चढ़ाई है। मन में जाने की इच्छा तो हुई पर हम इस हेतु तैयार हो कर नहीं आये थे। यहां से नंदादेवी पर्वत बिल्कुल नजदीक दिखाई देता हैं। नंदादेवी जाने के लिये यही रास्ता हैं। नंदादेवी पर्वत के पार तिब्बत की सीमा बताई गई।

तपोवन आश्रम से तपोवन गांव आकर साथियों ने चाय पी। वापसी साधन थोड़ी देर से मिला पर यात्रा आरामदायक रही। हमने तुरंत धर्मशाला पहुंच अपने सामान पैक किये और गोविंदघाट जाने हेतु बस स्टैण्ड पर आकर बस का इंतजार करने लगे। ढाई बजे तक बस न आने पर हम होटल में खाना खाने बैठ गये। आगामी गेट तो अब चार बजे ही खुलना है। सवा तीन बजे आई एक लोकल बस में आगे की सीटों पर जगह मिल गई पर आगे जाने वाली अन्य कोई बस न होने के कारण इस बस में भारी भीड़ हो गई। इस बस के कंडक्टर ने दादागिरी की भाषा में बात की और आदेश दे दिया कि केवल बद्रीनाथजी जाने वाले यात्री ही मेरी बस में बैठें। पीछे से आई दो बस की सवारियां भी इसी बस में भरी। कंडक्टर ने बस में बैठते ही यात्रियों से किराया भी वसूल कर लिया। अब तो दूसरी बस में भी नहीं जा सकते। हमने भी बद्रीनाथजी के टिकट बनवाये। बस वाले पीछे से बद्रीनाथजी की बुकिंग करके सवारियां बिठा लाते हैं फिर यहां जोशीमठ में कुछ किराया वापस कर भटकने के लिये छोड़ देते हैं। कल हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ था।

सवा चार बजे बस रवाना हुई। थोड़ा आगे जाते ही बस में भीड़ समाप्त हो गई। रास्ते भर सवारियां उतरती रही। अलकनंदा का पुल पार कर बस विष्णु प्रयाग पहुंची। इसके बाद मार्ग संकरा हो जाता है। यहीं महत्वकांक्षी पनबिजली परियोजना जयप्रकाश पॉवर प्रोजैक्ट का काम होता हुआ दिखाई दिया। गोविंदघाट में हमें पता लगा कि हेमकुंड यात्रा बंद हो चुकी है। अतः हमें बद्रीनाथजी ही जाना पड़ेगा। गोविंदघाट के बाद बस पांडुकेश्वर में काफी देर रुकी। हम साढ़े पांच बजे बद्रीनाथजी के बस स्टैण्ड पर उतरे। कुछ समय के असमंजस के बाद पारीक सा. के आदेश पर चौराहे तक सामान पहुंचाने हेतु कुली किया। बद्रीनाथजी में बिजली बंद होने के कारण अंधेरा छाया हुआ है। चौराहा पर ही स्थित गीता भवन में हमें सौ रुपये रोज में कमरा मिल गया। धर्मशाला में सामान पटक हम सीधे बद्रीनाथजी के मंदिर दर्शनार्थ जा पहुंचे। वहां शयन झांकी के दर्शन हो रहे थे। भारी भीड़ के बीच हमने भगवान के दर्शन कर प्रसाद ग्रहण किया। आज का हमारा दिन बहुत अच्छा गुजरा। औली की सैर, तपोवन में आचमन और अब श्री बद्रीनाथजी के दर्शन करने में हम सफल रहे। दर्शनोपरांत धर्मशाला आ थोड़ी देर आराम करने के बाद हाथ मुंह धो हम खाना खाने सवा नौ बजे साकेत अल्पाहारगृह पहुंचे। यह होटल बद्रीनाथजी का सबसे अच्छा होटल है तथा हमारी धर्मशाला गीता भवन के बिल्कुल पास ही है। इस होटल में सदैव भीड़ रहती है। हमें देर होने के कारण दाल रोटी ही मिल सकी। गीता भवन बंद होने का समय भी दस बजे का ही है। अतः हम सीधे धर्मशाला आ सो गये।

तारीख 7–10–2000 शनिवार विजयादशमी

प्रातः पांच बजे उठे। दोनों साथी चाय पीने बाजार गये तब तक मैं नित्यकर्मों से फारिग हुआ। झरोखे से कमरे के बाहर पश्चिम की ओर झांका तो साफ मौसम में विशाल बर्फ से ढंके नीलकंठ पर्वत के दर्शन हो रहे थे। यहां नीलकंठ देखना अत्यंत शुभ माना जाता है। मैं बैठा–बैठा हिमालय की छवि निहारता रहा। साथियों के आने पर मैंने उन्हें

यह दृश्य बताया। वे भी ये दृश्य देखते हुये ही आ रहे हैं। उनके आग्रह पर मैं कैमरा लेकर बाजार में आ गया। इसी बीच सूर्योदय हो गया तथा नीलकंठ एवं पास के नारायण पर्वत की चोटियां सुनहरे रंग में चमकने लगी। अत्यन्त विलक्षण दृश्य, हम बहुत देर तक निहारते रहे। कई फोटो भी लिये। थोड़ी देर बाद ही वे चटक सुनहरे रंग की पर्वत चोटियां बादलों की ओट में खो गई। हमारा परम सौभाग्य है कि हम यह दृश्य देख सके। इसके बाद हम बारां फोन लगाने हेतु दुकान पर गये पर बात नहीं हो सकी। वापस धर्मशाला आ हमने अपने पहनने के कपड़े थैलों में जमाये एवं गर्म पानी के मंदिर के सामने स्थित कुंडों पर स्नान हेतु पहुंच गये। यात्रियों की अच्छी भीड़ है। कुंडों में पानी ज्यादा गर्म रहता है और हम काफी देर बाद सहज हो पाये। हमने जी भर कर स्नान किया फिर दर्शनार्थ मंदिर गये। मंदिर से लगी दुकान से पूजा की थालियां ली तथा कैमरा सहित सारा सामान यहीं छोड़ा। मंदिर में कैमरा ले जाने की सख्त मनाही है। चमड़े का सामान (बेल्ट, पर्स आदि) सभी तीर्थों की भांति यहां भी ले जाना वर्जित है। बद्रीनाथजी में आठ से बारह बजे तक खुले दर्शन होते हैं। हम कतार में लग भगवान के दरबार के सामने पहुंचे तथा पांच मिनट तक खड़े रह आराम से दर्शन किये। प्रसाद लिया, परिक्रमा की व फिर कार्यालय में जाकर रसीदें कटवाई। मुझे बारां से अनिल चौधरी ने यहां भेंट करने हेतु 21 रु. दिये थे। पारीक सा. से भी दो श्रद्धालुओं ने भेंट भिजवाई थी। मंदिर का काम निपटा हम दुकानदार से अपने सामान ले धर्मशाला आ गये।

अब हमने माणागांव एवं वसुधारा जाने की तैयारियां शुरु की। रास्ते में आते समय हम इसकी जानकारियां करते आये थे। आज यहां तेज धूप खिली है। हमने अपने गीले कपड़े कमरे में सुखाये। सफर पर जाने के लिये सामानों का बैग पैक किया गया। सर्दी महसूस नहीं हो रही है इसलिये हमने गरम कपड़े बहुत कम रखे। पानी की बोतल, कैमरा, नाश्ता तथा कुछ दवाइयां साथ ली। धर्मशाला के पास के एक रेस्टोरेंट में बेस्वाद आलू के परांठे खाये। माणागांव के साधन की तलाश करते हम परमार्थलोक आश्रम के पास आ गये। यहां आते–आते मेरा मन बदला। मैंने सुझाव दिया कि आज तो बद्रीनाथजी के विभिन्न स्थानों के ही दर्शन करते हैं, वसुधारा कल चलेंगें। मेरे यह सुझाव देने के पीछे दो कारण थे। पहला अभी उमा भारती (सांसद) को कालीमठ से बद्रीनाथजी दर्शन करने के लिये आना था। वे राजनैतिक नाराजी के चलते कोई बीस दिनों से दुनियादारी छोड़ कालीमठ में रह रही थी। दूसरा आज के दिन बद्रीनाथजी मंदिर में होने वाला धर्म संसद का आयोजन है। यह दोनों सूचनायें हमें एस. टी. डी. की दुकान पर मिली थी। प्रतिवर्ष बसंत पंचमी को मंदिर के कपाट खोलने हेतु तथा दशहरे के दिन कपाट बंद करने का शुभ समय निकालने हेतु मंदिर के हॉल में बद्रीनाथ–केदारनाथ मंदिर समिती के सारे पदाधिकारी तथा संत महात्मा अपने प्राचीन पोथी–पत्रों के साथ उपस्थित हो, परंपराओं एवं ज्योतिष के आधार पर वाद–विवाद कर निर्णय लेते हैं। मैं ऐसे दुर्लभ अवसर को पकड़ना चाहता हूं। सभी साधु–संतों तथा महंतों के एक साथ दर्शन करने का यह सुनहरा अवसर लग रहा है। मेरे दोनों साथियों ने मेरा सुझाव खारिज कर दिया। कुछ देर प्रयास के बाद माणागांव के लिये वाहन न मिलने पर हम पैदल ही बढ़ने लगे।

थोड़ा आगे जाने पर हमें एक हैलीकॉप्टर यहां पास ही बने हैलीपेड पर उतरता दिखाई दिया। फिर हैलीपेड से चार–पांच कारों का काफिला मंदिर की ओर दौड़ा। इन्हें देखते ही पारीक सा. का मूड बदला, ''चलो अब उमा भारती जी आ ही गई हैं तो वापस चलते हैं।'' हम यथासंभव तेज गति से चलकर मंदिर पहुंचे। तब तक उमाजी अपने साथ आये सांसद विनय कटियार के साथ मंदिर के दर्शन कर सीढ़ियां उतर रही थी। यहां चल रहे 'जैन मंदिर नहीं बनेगा' आंदोलन के भूख हड़तालियों ने दोनों सांसदों का घेराव कर उन्हें ज्ञापन दिया। विनय कटियार बार–बार कह रहे थे कि यहां जैन मंदिर बनाने का कोई प्रस्ताव नहीं है पर आंदोलनकारी उमाजी से आश्वासन चाहते थे। पहले तो उमाजी इस आंदोलन पर आश्चर्यचकित हो कहती रही कि यदि जैन मंदिर बन जाये तो क्या हानि है? फिर कटियार जी के समझाने पर उन्होंने ज्ञापन पर विचार करने का आश्वासन दे पिंड छुड़ाया। उमाजी को अधिकारी लोग निकाल कर ले गये। असंतुष्ट हड़ताली काफी देर तक टीका–टिप्पणी करते रहे। पूरे उत्तराखंड इलाके में हमें 'बद्रीनाथजी में कोई जैन मंदिर नहीं–कोई जैन मूर्ति नहीं' इस आशय के पोस्टर पढ़ने को मिले थे पर हमने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया था। यहां बद्रीनाथ जी में सनातन वैष्णव धर्म की प्रतिष्ठा है। आंदोलनकारी यहां जैन मंदिर नहीं बनने देना चाहते। इस आंदोलन का नेतृत्व बद्रीनाथजी

मंदिर के मुख्य महंत नम्बूदिरीपाद रावल कर रहे हैं। हमने उन्हें भूख हड़तालियों के साथ बैठे देखा था। हम सभी धर्मों का आदर करने वाले आंदोलनकारियों की विचारधारा से सहमत नहीं हो पाये। निश्चय ही यह आंदोलन दोनों धर्मों के बीच दरार पैदा करेगा। अभी यहां जैन धर्मावली भी उसी श्रद्धा से आते हैं। जैन धर्मावलियों का मानना है कि बद्रीनाथजी की मूर्ती जैन तीर्थंकर की ही प्रतिमा है। यहां बद्रीनाथजी में दिगम्बर जैन धर्मशाला भी बनी हुई है। हम साथियों को ऐसी विभूतियों के इतने निकट से दर्शन हो सके इसे ही हमने अपना सौभाग्य माना। थोड़ी देर में भीड़ छंट गई और हम भी वसुधारा के रास्ते चल पड़े। हम अलकनंदा का पुल ही पार कर पाये थे कि हमें हैलीकॉप्टर उड़ता दिखाई दिया।

मेरी धर्म संसद देखने की भी इच्छा थी। अब आ ही गये तो इसकी भी जानकारी लें। हमें पता लगा कि धर्म संसद में आम आदमी को जाने की अनुमति नहीं होती है। फैसला होने के बाद मंदिर से आम जनता के समक्ष इसकी घोषणा कर दी जाती है तथा रेडियो व टी.वी. पर समाचार प्रसारित कर दिया जाता है। अब हमारा यहां रुकने का कोई प्रयोजन नहीं रहा और हम पुनः माणागांव जाने के लिये टैक्सी स्टैण्ड पहुंच गये। हमें यहां जीपें तो मिली पर हम तीन व्यक्तियों में पूरी जीप का किराया देने पर सहमति नहीं बन सकी। हम पैदल ही चल पड़े। माणागांव तक रास्ता समतल जैसा ही है इससे यहां तक पहुंचने में हमें कोई थकान नहीं आई। एक मकान में चल रही चाय की दुकान पर रुके। पारीक सा. एवं महेन्द्रजी के लिये चाय बनने तक हमने काफी जानकारियां ली। इस होटल का नाम रूंगफा होटल हैं। यहां बैठे एक बूढ़े ने बताया कि माणागांव से तिब्बत मात्र अड़तालीस किमी है। पहले हम इधर से खच्चरों पर लाद कर नमक एवं सुहागा ले जाते थे तथा उधर से ऊनी सामान लाते थे। यदि सेना की पाबंदी नहीं हो तो आज भी यह व्यापार हो सकता है। उसने हमारे से कहा कि हम वसुधारा के लिये बहुत देर से निकले हैं। रास्ता तो पांच किमी ही है पर हमें जाने में चार घंटे लग जायेंगें। हमने हिसाब लगाया कि हम तीन बजे वसुधारा पहुंच जायेंगें फिर भी यह बुजुर्ग मना कर रहे हैं तो कोई कारण तो होगा ही। हमने शंका समाधान हेतु पूछा,

''क्या रास्ते में कोई खतरा है या बारिश आने का डर है?''

''बारिश तो आजकल नहीं आ रही पर सर्दी से आप लोग परेशान हो जाओगे।''

बाबा की सलाह ने हमें कुछ चिंता में तो डाला पर हमारा फैसला नहीं बदला। चाय की होटल छोड़ने के बाद हमारे को फुर्ती दिखानी ही थी। पास ही गणेश गुफा में दर्शन किये। भीमपुल के चलते–चलते ही फोटो लिये। व्यास गुफा तथा रास्ते का एक मंदिर हमने आते समय के लिये छोड़ दिये।

प्रशासन द्वारा आजकल वसुधारा का पर्यटन स्थल के रूप में खूब प्रचार किया जा रहा है। बद्रीनाथ मंदिर में भी इसका सूचनापट्ट लगा हुआ है। सन् 1974 में मेरे पिताजी के नेतृत्व में चारधाम यात्रा पर आये 85 यात्रियों के दल में मैं भी शामिल था। वसुधारा की यात्रा तब भी इतनी ही कठिन थी। बद्रीनाथ जी में हमारे पंडे जी की धर्मशाला से हम कोई सत्तर व्यक्ति वसुधारा दर्शनार्थ निकले थे इसमे से पचास यात्री माणागांव तक पहुंचे, इनमें से तीस यात्री मात्र भीम पुल तक पहुंच पाये। वसुधारा तक तो हम मात्र दस–बारह जने ही पहुंच पाये थे। इनमें पांच तो मेरे परिवार के ही थे। बाबूजी, हम तीन भाई (मैं हेमराज, छोटे भाई हरि व अशोक) तथा छोटी बहिन शकुंतला। हमारे सामने वाले परिवार के रामप्रतापजी बंसल तथा उनका पुत्र हरिमोहन के भी उस समय वसुधारा पहुंचने का मुझे ध्यान है। छब्बीस वर्ष पूर्व की बात आज मुझे याद आ गई। हम इस रास्ते को सरल मान रहे थे पर यह अति विकट निकला। हम हमारा लक्ष्य समीप ही आंकते और पहाड़ी पार करने के बाद पता लगता कि अभी तो मंजिल दूर है। पैरों में थकान तथा सांस फूलने की शिकायत तो हम तीनों को है पर पारीक सा. ज्यादा तकलीफ में लगे। उम्र का तकाजा भी है। ग्यारह बजे माणागांव से चले हम लोग डेढ़ बजे वसुधारा पहुंचे। हमें बहुत सारे यात्री वापस आते मिले। हम सोच रहे थे कि यहां आज पहुंचने वाले अंतिम यात्री हैं पर जल्दी ही इस धारणा का खंडन हो गया। वसुधारा में नीचे तक उतर कर हमने ठंडी फुहारों का आनंद लिया। यहां जल प्रपात करीब चार सौ फुट ऊपर से चट्टानों के टकराते हुये नीचे गिरता है। पूरा पानी फुहारों के रूप में बदल बादलों सा उड़ता हुआ नीचे आता है। ऐसा नायाब दृश्य देखना किस्मत की ही बात है। सामने उत्तरी ओर बर्फ से ढंके पहाड़ नजर

आ रहे हैं। वसुधारा से आगे भी मार्ग दिखाई दे रहा है पर यहां एक सूचना पट्ट लगा हुआ है।

''इस स्थान से आगे जाने के लिये तहसीलदार श्रीबद्रीनाथजी से अनुज्ञापत्र लेना अनिवार्य है।''

न तो आगे जाना हमारा लक्ष्य है और न ही हमारी टांगों में इतनी ताकत बची है और न ही समय है। यहां तक आकर भी हमने हिमालय के रोमांचक पर्यटन का खूब लुत्फ उठाया है। हमारा मन ईश्वर की इस रचना को देख पुलकित हैं। वसुधारा जल प्रपात के नीचे गिरे पड़े बड़े–बड़े शिलाखण्डों पर उड़ती फुहारों के बीच बैठ हमने नाश्ता किया। पारीक सा. ने बताया कि वसुधारा की एक बूंद भी शरीर पर पड़ने से जन्मजन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। हमने एक नहीं लाखों फुहारें ग्रहण की, साथ ही बोतल में पानी भी भरा जिसे हम दिन भर पीते रहे। सवा दो बजे हमने वापसी यात्रा शुरु की। वापसी में हमें हवा का विपरीत रुख मिला। सामने से चेहरे पर पड़ रही हवायें हमारे आगे बढते कदमों को बोझिल बना रही हैं। तीन बजे तक पूरी घाटी में से धूप गायब हो गई। इस घाटी में ऊंचे पहाड़ की छाया पड़ने लगी। हमारे चेहरे एवं छाती पर लगते ठंडी हवा के थपेड़ों ने हमें कँपा दिया। माणागांव से जाते समय खरीदे तीन टोपे जीवन रक्षक बन गये। कम कपड़े लाने का खामियाजा हमें भुगतना पड़ा। सर्दी से बचने का एक ही उपाय था तेजी से बढते रहो। थकान व सर्दी के कारण फोटोग्राफी, मंदिर, गुफा सब छूट गये। कहावत भी है, 'रहे काम रावण से भी नहीं होते।' हम सीधे माणागांव के उसी रूंगफा होटल में आ कर रुके जहां जाते समय चाय पी थी। चाय बनने पीने तक हम होटल वाले के चूल्हे में तापते रहे। आगे आ टैक्सी स्टैण्ड पर हमने बद्रीनाथजी आने के लिये साधन तलाश किया पर कोई वाहन नहीं मिल सका एवं हमें पैदल ही आना पड़ा। वापसी में उतार का यह रास्ता भी हमें बहुत भारी पड़ा। आसमान में भारी बादल छाये थे पर हमारी खुशकिस्मती थी कि बरसात नहीं हुई। साढ़े चार बजे हम धर्मशाला में पहुंच पस्त हो रजाई में दुबक गये।

वसुधारा यात्रा से हमारे चलने एवं श्रम करने की क्षमता की पोल खुल गई। कुल सोलह किमी की यात्रा उसमें भी मात्र चार किमी की चढ़ाई ने ही हमारे हाथ–पांव फुला दिये। थकान के मारे हमें गहरी नींद आ रही थी। पारीक सा. ने आवाज लगाई,

''छः बज गये, मंदिर चलना है कि नहीं।''

मैंने नींद में ही कहा,

''मंदिर क्यों नहीं चलेंगें, अभी उठते हैं, आधे घंटे बाद।''

दरअसल हमारे पास मंदिर में साढे छः बजे होने वाली आरती का 75 रु. वाला टिकट है। हम साढे छः बजे उठ, फटाफट तैयार हो, सात बजे मंदिर में जाकर लाइन में लग गये। टिकट द्वारा हमें अंदर प्रवेश मिल गया। मंदिर चौक में सारे टिकटधारी श्रद्धालु बिठाये गये फिर सभी टिकटधारकों के नाम मंदिर के पुजारीजी द्वारा माइक पर सुनाये गये। हम सभी के नाम से अब विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ होगा। पाठ से पूर्व मंदिर में विराजमान सभी देवीदेवताओं का परिचय करवाया गया। माइक पर पुजारी जी के नेतृत्व में सहस्त्रनाम पाठ शुरु हुआ। कई यात्रियों को पाठ याद था वे साथ में दोहराने लगे। हमारे जैसे अज्ञानी भावविभोर हो सुनते रहे। सस्वर पाठ से मुझे रोमांच सा हो गया। यह दर्शन हमें बहुत ही अच्छा लगा। प्रसाद लेकर हम मंदिर से वापस आये। रास्ते में साकेत रेस्टोरेंन्ट पर हमने तीन थाली लेकर भोजन किया। थाली में निर्धारित मात्रा से बहुत कम हम खा पाये। हमने आज प्रातः से ही भोजन नहीं किया पर थकान व सर्दी के कारण आये बुखार से हमारी भूख मर गई। खाने के बाद गायत्री मंदिर धर्मशाला आकर हम सो गये।

इस इलाके में आज दशहरे के दिन से शादी ब्याह शुरु हो जाते हैं। बस से यात्रा के दौरान हमें कई जगह शमियाने सजे हुये दिखाई दिये थे। पहले हम साथी सोचते रहे यह दशहरे की सजावट होगी। फिर ज्यादा टेंट देख हमने सहयात्रियों से पूछा। अभी शादियां होना मुझे आश्चर्यजनक लगा क्योंकि हिन्दु धर्म में देवशयन एकादशी से देवोत्थान एकादशी तक विवाह सहित सभी शुभ कार्य वर्जित माने गये हैं। बद्रीनाथजी एवं माणागांव में भी हमें विवाह मंडप मिला। आज पौने सात बजे बैंड बाजों के साथ हमारी धर्मशाला के सामने से एक जुलुस निकला था। दुल्हा घोड़े पर सवार था जिस पर एक बाराती ने सामान्य काली छतरी लगा रखी थी। आगे बाराती दो पंक्तियों में अलग ही तरीके से नृत्य करते चल रहे थे। मैं इसे दशहरे की सवारी समझता रहा। आगे जाकर शायद तोरण पर

जोरदार आतिशबाजी होते हुये भी दिखाई दी। मैने समझा रावण मारा जा रहा है। नीचे आने पर मैने एक दुकानदार से दशहरा मैदान की जानकारी चाही तो उसने बताया कि यहां ऐसा कोई मैदान नहीं है। यहां रावण मारने की परंपरा भी नहीं है। हां यहां आज के दिन से विवाह होना शुरु हो जाता है।

तारीख 8–10–2000 रविवार आसोज सुदी एकादशी संवत 2057

प्रातः थोड़ा आराम से उठ सात बजे गर्म पानी के कुंडों पर स्नानार्थ गये। रात हमने श्रीबद्रीनाथजी महात्म्य पुस्तक खरीद कर पढ़ी थी। इसमें यहां स्थित कई शिलाओं, मंदिरों, जल धाराओं आदि का महात्म्य बताया गया है। हमने पुस्तक में वर्णित शिलाओं को देखा, एक शिव मंदिर के दर्शन किये। इसके बाद हम बद्रीनाथजी के दर्शन कर धर्मशाला लौटे। आज पारीक सा. ने काफी कपड़े गर्म पानी के कुंड के बाहर धोये हैं। कमरे में जैसे–तैसे कर उन्हें सुखाया। इसके बाद हम बद्रीनाथजी नगर घूमने निकले। बस स्टैण्ड होते हुये पुराने पुल से गंगा नदी पार कर पुराने व मुख्य बाजार में आये। बाजार से मंदिर के सामने से होते हुये नये पुल से वापस धर्मशाला पहुंचे। अब हमने बद्रीनाथजी से विदा लेने का मानस बना लिया। रवाना होने से पूर्व भोजन करने गये। आज साकेतधाम भोजनालय पर भारी भीड़ है अतः हम उसके सामने वाले विजय भोजनालय में घुस गये। इस भोजनालय में साफ–सफाई का स्तर कमजोर है तथा दरें भी ज्यादा हैं। इसके बाद हमने सामान बांध कमरा खाली किया। बहुत ढूंढने पर भी कुली नहीं मिल सका और बस स्टैण्ड तक हमें सामान ढोना पड़ा। यहां साढ़े ग्यारह बजे गेट खुलता है। हम उस हिसाब से ही बस स्टैण्ड पहुंचे थे पर हमारा आज दिन अच्छा नहीं है। हमारे आने से पूर्व ही सभी बसें निकल चुकी थी। काफी भागदौड़ के बाद दो बजे रवाना होने वाली गढ़वाल मंडल आपरेटर्स यूनियन की बस में सामान जमाये। समय बहुत था अतः हमने आसपास हमारे गीले कपड़े सुखा दिये। मुझे निगरानी पर छोड़ महेन्द्रजी व पारीक सा. दोनों एक बार और बाजार घूम आये। इस बस में हमने हमारे सामान छत पर रख कर तालाबंद कर दिये थे। मध्य की एक साथ तीन वाली सीट भी रोक रखी थी। बद्रीनाथजी से बस बहुत ज्यादा भरकर निकली। बस सामान्य है जो हर जगह रुकती हुई चल रही है। जोशीमठ पहुंचने में पांच बज गये। इसके बाद बस में भीड़ कम हुई तथा चमोली तक बस तेजी से आगे बढ़ी। चमोली में चाय नाश्ता हुआ। साढ़े आठ बजे कर्णप्रयाग पहुंचे। बस हरिद्वार तक की है पर बाकी सफर अब कल तय होगा। वैसे हमने कर्णप्रयाग तक के ही टिकट लिये हैं।

कर्णप्रयाग ठहरने के लिहाज से उम्मीद जैसा अच्छा शहर नहीं निकला। बस स्टैण्ड के आसपास ढंग का होटल नहीं मिला तो बहुत दूर एवं ऊँचाई पर स्थित बद्री–केदार समिती की धर्मशाला देखने गये। आधुनिक सुविधाओं का अभाव तथा बस स्टैण्ड से दूरी होने के कारण हमें यह जगह भी पसंद नहीं आई। हार कर पास ही के खालसा होटल में डेरा डाला। भोजन हेतु यहां शुद्ध शाकाहारी होटल भी नहीं मिला। एक घटिया होटल में जाकर खराब सा खाना खाया। हमारा मन नहीं भरा था अतः अपने खालसा होटल में अपने खाद्य सामान निकालकर खाये। यहां बस स्टैण्ड पर रामलीला हो रही हैं। हमें आगे सफर करना है अतः हम सब ओर से ध्यान हटाकर सो गये। हमें यहां रुकने का बहुत पश्चाताप रहा।

तारीख 9–10–2000 सोमवार

प्रातः सात बजे नहा धो निबट बस स्टैण्ड आये तो रुद्रप्रयाग जाने वाली बस बिल्कुल खाली खड़ी थी। बस हमारे बैठते ही चल दी। रास्ते में बस पूरी भर गई। हमें कहीं देरी नहीं हुई। रुद्रप्रयाग उतरते ही दूसरी बस गुप्तकाशी जाने हेतु खड़ी मिली। गुप्तकाशी तक का सफर आराम से तय हुआ। गुप्तकाशी बस स्टैण्ड पर हमने खाना लिया। वहां से एक टाटा सूमो जीप में बैठ एक बजे हम गौरीकुंड पहुंच गये। यहां हल्की बारिश मिली तथा सर्दी तेज हो गई। एक होटल में बैठ पहले चाय पकौड़ी का आनंद लिया। फिर रुकने हेतु होटल तलाशे। यहां रुकने के सर्वश्रेष्ठ स्थान बद्री–केदार समिती धर्मशाला तथा सूर्या होटल खाली नहीं हैं। तीन–चार जगह देखने के बाद विजय ट्यूरिस्ट लॉज में तीन पलंगों वाला अटैच लेटबाथ कमरा 75 रु. रोज मात्र में लिया। कमरा दूसरी मंजिल पर है अन्य कोई खराबी नहीं है। दो बजे तक हम कमरे में सेट हो चुके थे। हम आज ही केदारनाथजी के लिये प्रस्थान कर सकते थे पर हमने बारिश के कारण यहां रुकने का ही निर्णय लिया। दिनभर सोने या बातें करने में ही बिताया। दिन में एक बार बाजार घूमने तथा रात को खाना खाने हेतु ही कमरे से बाहर निकले।

तारीख 10–10–2000 मंगलवार तेरस

प्रातः पांच बजे उठ गर्म कुंड में स्नान किया। बैगों में आवश्यक सामान भरकर हम छः बजे केदारनाथजी के लिये रवाना हो गये। हमने अपना विजय ट्यूरिस्ट लॉज नहीं छोड़ा। कमरे में हमारे सारे सामान फैल रहे हैं तथा गीले कपड़े सूख रहे है। एक घोड़ेवाला लॉज में ही आकर दो–दो सौ रु. में तीन घोड़े तय कर गया था। आज मुझे अजीर्ण के कारण बहुत तकलीफ रही। घोड़ों पर बैठने के कारण कुल्हों तथा जांघों में दर्द शुरु हो गया। नियमित विश्राम स्थल रामबाड़े में बीस मिनट रुके। मैं पैदल चलने के लिये भी रास्ते में तीन जगह उतरा। दस बजे हम श्री केदारनाथजी पहुंच गये। मंदिर से कुछ पूर्व की दुकान से हमने पूजा की तीन थालियॉ ली। हमने अपने बैग इसी दुकान पर डाले। एक जवान पुरोहित जी भी हमारे साथ हो लिये। फुर्सत के क्षणों में तसल्ली से श्री गणेशजी, केदारबाबा एवं मां पार्वती की पूजा–अर्चना एवं परिक्रमा की। पुरोहित जी को दक्षिणा दे आशीर्वाद लिया, चार–पांच फोटो लिये तथा शंकराचार्य जी के स्मृति बाग में बैठ कुछ देर सुमेरु पर्वत पर जमे बर्फ को निहारा।

श्री केदारनाथ जी उत्तराखंड के चार धामों में सबसे ज्यादा ऊॅचाई पर स्थित है। यहां का पहाड़ी प्राकृतिक सौन्दर्य भी सर्वोत्तम है। रुद्रप्रयाग से रामबन चट्टी तक घने वृक्ष हैं, तथा पूरी घाटी में हजारों झरने नयनों को तृप्त करते हैं। सामने का पहाड़ जिसे घोड़ेवाले ने सुमेरु पर्वत बताया है सूर्य की रोशनी में चमक रहा था। यात्रा के दौरान पूरे रास्ते हम घोड़ों पर बैठे इन दृश्यों का आनन्द लेते आये थे। वापसी यात्रा हमने पैदल करने का निश्चय किया। केदारनाथ मंदिर तथा शंकराचार्य मठ दर्शनीय स्थल हैं। हिमालय पर्वत पर बर्फ से ढंके प्राकृतिक रूप से बने कई तालाब, झीलें, कुंड आदि हैं। बद्रीनाथ जी के रास्ते में हेमकुंड, यहां केदारनाथजी में ऊपर वासुकीताल ऐसे ही स्थान हैं जो समुद्री तल से 15000 फीट ऊॅचाई पर हैं। वासुकीताल केदारनाथजी से आठ किमी पश्चिमी पहाड़ पर है जहां एक पतली पगडंडी जाती है। इसी तरह गांधीसागर नामक झील उत्तरी पहाड़ पर करीब पांच किमी दूर है। यहां तीन किमी पैदल मार्ग पर एक भैरवमंदिर भी हैं। केदारनाथजी में इन सब स्थानों पर घुमाने हेतु गााइड भी हैं। हमारे और खासकर महेन्द्रजी के घूमने का समय समाप्त हो गया है तथा अब हमें घर लौटना है इसलिये हमने सिर्फ वापस गौरीकुंड जाने के बारे में ही सोचा।

सामान उठाने से पूर्व यहीं स्थित केदार रेस्टोरेंन्ट में हमने साढ़े ग्यारह बजे करीब खाना खाया। केदारनाथ जैसी जगह के हिसाब से खाना बहुत अच्छा तथा सस्ता लगा। खाने के बाद महेन्द्र जी अदलक्खा की इच्छा अपने पुश्तैनी पंडे से मिलने की हुई। महेन्द्र जी को पंडेजी का नाम पता कुछ भी मालूम नहीं था। केवल यह पूछने पर ही कि मियांवाली के पंडा जी कौन हैं वहां की जनता ने हमें सही जगह पहुंचा दिया। आध घंटे के प्रयास के बाद हम पंडा श्रीनिवासजी पिस्तावालों की गद्दी पर पहुंच गये। पंडित जी के दर्शन भी हो गये। वहां पंडित जी ने जजमान का यथायोग्य स्वागत किया। महेन्द्रजी ने अपने पूरे परिवार के नाम पते उनकी पोथियों में लिखवाये। महेन्द्रजी ने पंडितजी से अपने पुरखों के नाम बताने का अनुरोध किया जिसे पंडितजी ने यह कह कर टाल दिया कि पुरानी बहियां नीचे गांव में जा चुकी है, आप लोग बहुत लेट दर्शन करने आये हो। कभी जल्दी आओगे तो सब बता देंगें। इसके बाद पंडाजी ने हम सभी को सूखे ब्रह्म कमल उनके नाम पते छपे लिफाफे में रख कर तिजोरी में रखने हेतु दिये। महेन्द्रजी ने पंडित जी को 50रु. भेंट में दिये एवं प्रणाम् कर विदा ली।

साढ़े बारह बजे हम केदारनाथजी से वापस गौरीकुंड पैदल रवाना हुये। मौजमस्ती करते आराम से चलते चार बजे गौरीकुंड पहुंच गये। पैदल चलने से हमें भूख लग आई। एक रेस्टोरेन्ट में समोसा एवं जलेबी खाई। दो बिस्किट के पैकिट हमने कमरे में ले जाकर खाये। फिर आराम करने हेतु रजाइयों में दुबक कर सो गये। मुझे तो गहरी नींद आ गई। दोनों साथी न जाने कब गर्म पानी के कुंड में जाकर अपने पांव सेक आये। मैं छः बजे उठा तो मुझे भी यह बात बताई गई। गर्म पानी में नहाने एवं टांगों की सिकाई करने से तो सारी थकान उतर ही जानी है। मैं भी स्नान हेतु गया पर तब तक कुंड सफाई हेतु खाली कर दिया गया था। यहां साढ़े पांच बजे ही अंधेरा हो गया था। हमने समय रजाई में दुबक कर बातें करने में बिताया। आठ बजे बाद हम एक साधारण ढाबे पर जाकर दाल

रोटी खाकर आये। हमने वापसी यात्रा हेतु जानकारी ली है। हम सुबह पांच बजे हरिद्वार जाने वाली बस में बैठेंगें। यह यहां से हरिद्वार के लिये निकलने वाली पहली ही बस है। यथासंभव सामान पैक कर हम नौ बजे ही सो गये ताकि प्रातः जल्दी उठ सकें।

11–10–2000 बुधवार चतुर्दशी

प्रातः पौने पांच बजे पारीक सा. की आवाज पर उठे व गौरीकुंड में स्नान कर आये। सवा पांच बजे बस स्टैण्ड पहुंच गये। पांच बजे वाली बस जाने को तैयार खड़ी थी। अंतिम तीन टिकट लेकर पीछे ही पीछे की सीटों पर बैठ गये। अटैचियां छत पर बांध दी गई। पीछे की सीटों के कारण मेरा विचार रुद्रप्रयाग तक का ही टिकट लेने का था पर महेन्द्रजी ने ठेठ हरिद्वार तक के ही टिकट ले लिये। बाद में यह निर्णय भी सही साबित हुआ। पीछे बैठने के बावजूद कोई परेशानी नहीं हुई। थोड़ी ही देर बाद मुझे खिड़की के पास बैठने का अवसर मिल गया। पूरे रास्ते घाटी, मंदाकिनी तथा बर्फ के पहाड़ों को निहारता रहा। ठंडी हवाओं से बचने के लिये खिड़कियां बंद रखनी पड़ी। गुप्तकाशी तथा रुद्रप्रयाग में 15–15 मिनट बस रुकी। श्रीनगर में बस डेढ घंटा करीब ठहरी शायद कुछ खराबी के कारण। मैं पेट की बीमारियों की गिरफ्त में आ गया हूं। अजीर्ण के साथ बवासीर का प्रकोप भी शुरु हो गया। परहेज के हिसाब से मैंने श्रीनगर में मात्र दो केले खाये। बाकी सारे यात्रियों ने चाय नाश्ता किया। आगे ब्यासी नामक स्थान पर बस खाना खाने हेतु रोकी गई। हमने भी दाल, रोटी, चावल व सब्जी की तीन थालियां ली। ढाई बजे बस ने हमें हरिद्वार बस स्टैण्ड पर उतारा। पारीक सा. ने तुरंत ही मुजफ्फरनगर जाने हेतु हमारे से विदा ली। महेन्द्रजी व मैं साइकिल रिक्शा कर गरीबदासजी की धर्मशाला में आ गये।

हमारी बद्री–केदार यात्रा सानंद सम्पन्न हुई। ईश्वर इस यात्रा में हमारे साथ रहा तथा उसकी अलौकिक दया का हमें सदैव आभास होता रहा। हमारी पूर्व में कोई योजना नहीं बनी थी, 'रमता जोगी बहता पानी' की तरह हम घूमते रहे। हरिद्वार पहुंच हम पारीक सा. से पृथक हुये। इस बार हमें धर्मशाला में कमरा मिलने में भी थोड़ी कठिनाई आई। सामान सेट कर हम रेल्वे स्टेशन आरक्षण करवाने चले गये। एक घंटा लाइन में लगने के बाद हमें कल अर्थात् ता.12–10–2000 के देहरादून एक्सप्रेस में आरक्षित टिकट मिल गये। हमें कल दोपहर एक बजे हरिद्वार छोड़ना है। हमने कमरे में एक घंटा आराम किया फिर आवश्यक सामान ले पांच बजे स्नान व आरती दर्शन के निमित्त हर की पैड़ी पहुंचे। आज यहां विशेष सजावट एवं बिछावट की गई है। बीच के प्लेटफार्म पर एक मंच लगा हुआ है। पता लगा 'गौमुख से गंगासागर' गंगा बचाओ यात्रा आज यहां आई हुई है। आज गंगाआरती दर्शनार्थ कुछ वी.आई. पी. आये हुये हैं। उनकी सुविधा व सुरक्षा के लिये मार्ग रोक कर हजारों श्रद्धालुओं को तकलीफ पहुंचाई गयी। आरती के बाद हम मंच के सामने की कुर्सियों पर बैठ गये। पहले शांतिकुंज के सदस्यों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। फिर चमचागिरी, स्वागत–सत्कार व माल्यार्पण का दौर चला। हम दोनों यात्री थके हुये, गंगा को छूकर आती शीतल हवाओं से सर्दी के मारे कांपने लगे। आठ बजे हम मंच के सामने से उठ बाजार आ गये। दोनों की ही खाना खाने की इच्छा नहीं थी अतः एक–एक गिलास दूध पी धर्मशाला पहुंच गये। रास्ते में टेलीफोन बूथ से बारां महेन्द्रजी के घर तथा मुजफ्फरनगर पारीक सा. से बात की। पारीक सा. को हमारे आरक्षित कोच एवं सीटों की जानकारी दी ताकि कल उन्हें हमें ढूंढने में परेशानी न हो। कमरे में आने के बाद मैं सेवफल तथा पेड़े खाने लगा और महेन्द्र जी लाल मंजन रगड़ने गये। आज हमारे कमरे में गदेले नहीं है। तख्तों पर दरियां बिछी हुई हैं। हम उन्हीं पर लेट सोने का प्रयास करने लगे।

ता. 12–10–2000 गुरुवार पूर्णिमा

रात सख्त सतह के कारण हमें अच्छी नींद नहीं आई। रात का दूध भी नहीं पचा। प्रातः हर की पैढ़ी जाकर स्नान किया। लौटते समय हलुआ, पुरी व मालपुआ का नाश्ता किया। प्रसाद हेतु चावल की फूली तथा चीनी का चिरोंजीदाना खरीदा। आज हमारे पास समय है अतः पैदल ही आये गये। मेरी चंडी मंदिर तथा शांतिकुंज देखने जाने की इच्छा थी पर साथी को तैयार नहीं कर सका। हमने कमरों में सोकर समय गुजारा जो मुझे बहुत अखरता है। इस बार महेन्द्रजी की प्रतिज्ञा के कारण हम ताश भी नहीं खेले। दोपहर बारह बजे हम पैदल ही रेल्वे–प्लेटफार्म पहुंच गये। एक बजे ट्रेन लगने पर हम गाड़ी में बैठे। सामने की सीटों पर दक्षिण अफ्रीका से भारत भ्रमण पर आया एक अधेड़ जोड़ा बैठा हुआ

है। महिला कुछ हिंदी समझ लेती है। वे आधा भारत घूम चुके है। वे अब बृजमंडल जा रहे हैं। मुझे अपनी संस्कृति एवं देश पर बहुत गर्व हुआ।

मुजफ्फरनगर में पारीक सा. हमें ट्रेन पर आ मिले। उनके बेटी–दामाद उन्हें विदा करने आये। पारीक सा. के आने के बाद हमारा समय हंसी–मजाक में बीता। दैनिक यात्रियों के डिब्बे में घुस आने के कारण हमें कई जगह सिकुड़कर भी बैठना पड़ा। रास्ते में ही हमने बेटी पूनम द्वारा बांधा गया भोजन ग्रहण किया। आज हमने ताश भी खेली। दिल्ली के बाद हमारी रात आराम से गुजरी। सवाईमाधोपुर स्टेशन पर ट्रेन लेट होने से हमें बारां गाड़ी मिलने में शंका होने लगी थी पर कोटा पहुंचे तो हमें गाड़ी खड़ी हुई मिली। हमारे पास कोटा तक का ही टिकट था तथा नया टिकट बनवाने का समय नहीं था। अंता में जब महेन्द्रजी टिकट बनाकर लाने में सफल हुये तब हमें शांति मिली। बारां पहुंचने तक दस बज गये। पारीक सा. व महेन्द्र जी के परिजन इंतजार करते मिले जो उन्हें मोटर साइकिल पर बिठाकर ले गये। मैं साइकिल रिक्शा कर घर पहुंचा। इस तरह 2–10–2000 से प्रारम्भ हमारी यात्रा का तारीख 13–10– 2000 को समापन हुआ।

इति।

हेमराज बंसल